IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बाल साहित्यक नव आयाम: वीरेन्द्र झाक रूसल बाबा

शोधार्थी

मनिष कुमार

विश्वविद्यालय मैथिली विभाग

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा)

सारांश :

वीरेन्द्र झाक कविता-संग्रह रूसल बाबा आधुनिक समस्या पर आधारित लघु- संग्रह अछि। ई संग्रह बाल साहित्यक समृद्ध परम्परामे नव आयाम जोड़ैत अछि। बाल कविता केवल मनोरंजक साधन नहि, बल्कि नेना भुटकाक मानसिक, भावनात्मक आ नैतिक विकासक महत्वपूर्ण साधन होइत अछि। एहि संग्रहमे कवि बाल-मनक जिज्ञासा, कोमल भावनासभ आ समाजक प्रति ओहिठामक लगावकेँ सहज भाषा आ सरस शैलीमे प्रस्तुत कयलनि अछि।

संग्रहमे 'सभटा बात मानवै' कविता शिक्षकक प्रति आदर आ अध्ययनकेँ महत्व बुझबैत अछि। 'कियै सभ निपत्ता भेलै' आ 'नहि चुभकै छै नेना' कविता पर्यावरण विनाशक प्रति चेतना जागृत करैत अछि। 'रूसल बाबा' कविता दादा-पोताकेँ आत्मीय सम्बन्ध दर्शाबैत अछि। 'दै छै कुमारिकेँ मारि' कविता समाजमे, बेटीक स्थिति पर गभीर प्रश्न ठाढ़ करैत अछि। 'बौंसे छै दादी' आधुनिकताक असरि आ बदलैत समाजकेँ चित्रण करैत अछि, जतय मोबाइलक प्रभाव बढ़ल जा रहल अछि। 'चिट्ठी-पतरी' आ 'वाटर बोतल' कविता समाजमे तकनीकी विकास संग लोकजीवनमे भेल परिवर्तन पर प्रकाश दैत अछि।

वीरेन्द्र झा जीक ई संग्रह केवल कविता सभक संकलन नहि, बल्कि बाल मनोविज्ञान, समाज, पर्यावरण, पारिवारिक सम्बन्ध आ सांस्कृतिक मूल्यवान पर आधारित एक महत्वपूर्ण कृति थिक। मैथिली बाल साहित्यमे ई संग्रह मीलक पाथर साबित भ' सकैत अछि, कारण ई मनोरंजनक संग शिक्षाप्रद संदेश सेहो दैत अछि।

मूल शब्द : बाल- मनोविज्ञान, सामाजिक - चेतना, पारिवारिक सम्बन्ध, सांस्कृतिक महत्व, आ पर्यावरणीय चिंता।

प्रस्तावना :

वीरेन्द्र झा मैथिलीक स्थापित साहित्यकार छथि। 2022 मे 'उड़न छू' बाल कथा- संग्रह पर साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत छथि। हिनकर परिचिति मूलतः कथाकार उपन्यासकार आ नाटककार रूपमे छथि। 2024 मे हिनकर मैथिली बाल कविता-संग्रह 'रूसल बाबा' नवारम्भ मधुबनीसँ प्रकाशित भेल अछि। एहि संग्रहमे छोट छोट 21 गोट बाल कविता संगृहीत अछि।

ई संग्रह केवल मनोरंजनक साधन नहि, बल्कि बाल मनोविज्ञान, परिवेश, प्रकृति, नैतिक शिक्षा आ सामाजिक समस्यासभक प्रति नेनाक संवेदनशीलता बढ़ेबाक एकटा सफल प्रयास अछि। संग्रहक प्रत्येक कविता एकटा गूढ़ संदेश दैत अछि, मुदा एकदम सहज भाषा आ सरल शिल्पक कारण बच्चासभकेँ ई कवितासभ सहजहि हृदयंगम भ' जाइत अछि।

बाल साहित्य केवल मनोरंजनक साधन नहि होइत अछि, बल्कि बच्चासभक मानसिक, बौद्धिक आ नैतिक विकासमे महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करैत अछि। बच्चासभक भावना अत्यंत कोमल होइत अछि, तेँ हुनकालोकनि लेल एहन साहित्य आवश्यक अछि, जेना हँसी - खुशी आ खेल-खेलमे जीवनक महत्वपूर्ण शिक्षा द' सकैय। वीरेन्द्र झाक

बाल कविता-संग्रह 'रूसल बाबा' एहि आवश्यकताकेँ पूरा करैत अछि। भूमिका लेखिका बिभा कुमारीक कहब छनि जे – "एहि कविता-संग्रहक रचना क' क' कवि बहुआयामी लक्ष्य सभक सिद्धि केलनि अछि। जेना कविताक माध्यमसँ धिया-पुता सभकेँ भाषा ज्ञान करौनाइ, अपन परिवार, समाज, देश ओ विश्वक स्थिति-परिस्थिति आ समस्या सभसँ अवगत करौनाइ आ समस्याक समाधान ताकय लेल प्रेरित केनाइ आ मनोरंजन त' अछिए। कवि मनोरंजनकेँ कायम रखबामे सफल भेलथि अछि। शिक्षा, ज्ञान, उपदेश, संदेश प्रत्यक्ष नहि अपितु अप्रत्यक्ष अछि। एकटा बाल कविसँ पाठक जे अपेक्षा करैत छथि, तकर पूर्ति करबामे कवि अपनाके सक्षम सिद्ध केलनि अछि।"[1]

बाल साहित्य स्वयंमे एकटा अलग विधा अछि, जाहिमे भाषा, शैली आ प्रस्तुति अत्यंत सहज आ मनोरंजक आवश्यकता होइत अछि। 'रूसल बाबा' मैथिली बाल साहित्यक एकटा नव उपलब्धि अछि। एहि संग्रहमे बाल-मनक जिज्ञासा, मनोरंजन, शिक्षा, सामाजिक चेतना आ पर्यावरणीय चिंताकेँ कुशलतापूर्वक समाहित कयल गेल अछि।

बाल कवितामे रुचि बच्चा रंग, स्वर, ध्वनि, दोहराव आ लयबद्ध ई सभसँ बेसी प्रभावित होइत अछि। वीरेन्द्र झाक कवितासभमे एकटा संगीतमय प्रवाह अछि, जाहि कारणेँ ई सहजहि बाल-मनकेँ आकर्षित करैत अछि। सरल भाषा आ प्रभावी शैली ई संग्रहमे प्रयुक्त भाषा अत्यंत सहज आ सरस अछि, जाहिमे मैथिली लोकजीवनक मिठास समाहित अछि। एकर अतिरिक्त, कविता सभमे छंद आ लयक सुंदर तालमेल अछि, जे पाठककेँ सहजहि मोहित करैत अछि। नैतिक आ सामाजिक शिक्षा 'रूसल बाबा' संग्रहमे केवल मनोरंजन नहि, बल्कि समाज आ परिवेशक प्रति जागरुकताक भाव सेहो अछि। विभिन्न कवितामे बाल-पाठककेँ पर्यावरण, पारिवारिक सम्बन्ध, तकनीकी प्रभाव, जल संकट, नारी सम्मान आदि विषय पर गंभीरतासँ सोचबाक अवसर दैत अछि। 'रूसल बाबा' महत्वपूर्ण विषयसभ पर केंद्रित अछि।

प्रस्तुत अछि संग्रहक प्रमुख कविता सभक विवेचना :

सभटा बात मानबै : ई कविता शिक्षक दिवस आ शैक्षिक अनुशासन पर आधारित अछि। एहि कविताक माध्यमसँ कवि बच्चासभकेँ शिक्षाक महत्व बुझबैत छथि आ गुरुजनक आदर करबाक प्रेरणा दैत छथि। ई कविता चारि पदमे विभाजित अछि, जाहिमे प्रत्येक पद विशेष संदेश दैत अछि। कवि स्पष्ट करैत छथि जे —

"शिक्षक दिवस मनेबै हम
सरकेँ माला पहिरेबै हम
हुनका मिठाइ खुएबै हम
गिफ्टमे पेन देबै हम

★★★ ★★★
★★★ ★★★

रोज स्कूल जबै हम
सभटा सबाल बनैबै हम
सभतरि फर्स्ट करबै हम
ककरो बात नहि सुनबै हम।"[2]

पहिल पदमे विद्यार्थी शिक्षक दिवस मनबाक उत्साह प्रकट करैत छथि। ओ सभ अपन गुरुजीकेँ माला पहिरायत, हुनका मिठाइ खुआयत आ उपहार स्वरूप पेन देत। अंतिम पदमे विद्यार्थी अपन अध्ययनकेँ प्रति पूर्ण समर्पित भ' जाएबाक बात करैत छथि। ओ कहैत छथि जे ओ स्कूल नियमित रूपसँ जायत, सबटा सवाल सभकेँ हल करबाक कोशिश करत आ पढ़ाईमे सफलताक शिखर पर पहुँचत। हालांकि, अंतिम पंक्ति, ककरो बात नहि सुनबै हम, एकटा रोचक विरोधाभास प्रस्तुत करैत अछि। संभवतः ई बाल सुलभ मासूमियतक प्रतीक अछि, जाहिमे विद्यार्थी अपन स्वाभाविक जिद्द आ आत्मनिर्भरता प्रकट करैत अछि। एकर मूल संदेश अछि – विद्यार्थीकेँ अपन पढ़ाइकेँ प्रति गंभीर होबाक चाही, गुरुजीक आदेश मानबाक चाही आ अपन माता-पिता एवं विद्यालयक नाम रोशन करबाक प्रयास करबाक चाही।

कियै सभ निपत्ता भेलै : एहि कवितामे लेखक ग्राम्य जीवनसँ जुडल जीव-जंतु आ पारम्परिक लोकजीवनकेँ स्मरण करैत वर्तमान समयमे ओहिकेँ लुप्त होइत देखैत छथि। कविता बच्चासभक जिज्ञासा द्वारा प्रस्तुत कयल गेल अछि, जाहिमे ओ सभ अपन आसपाससँ विलुप्त भेल पशु-पक्षी आ पारम्परिक जीवनशैलीकेँ ल' क' अपन बड़-बुजुर्गसभसँ प्रश्न करैत अछि। कविता एक छोट बच्चाक सवालसँ शुरू होइत अछि।

कवि स्पष्ट करैत छथि जे —

‘‘खिखिर-नढ़िया कतय गेलै
कियै सभ निपत्ता भेलै ?
नढ़ियाक हुआँ-हुआँ नहिये रहलै
बानर, घोरगदहा चलिये गेलै
गाममे कियो ने रहलै
गाय-महींस-बड़दो नहि रहलै
साँढ़- पाड़ा पड़ाइये गेलै ’’[3]

बच्चाक एहि प्रश्नमे गाम घरसँ लुप्त भ’ रहल पारम्परिक जीवनशैलीक स्पष्ट झलक भेटैत अछि। नढ़ियाक हुआँ-हुआँ नहिये रहलै अर्थात गामघरमे पशु घटि गेल अछि आ पारम्परिक कृषि-व्यवस्था बदलि गेल अछि। पशुधन आ कृषि-प्रधान समाजमे होइत बदलावक संकेत करैत अछि। ई कवितासमाजक आधुनिकताक दौड़मे छूटि रहल परम्परागत संस्कृतिसँ अवगत कराबैत अछि। औद्योगीकरण, शहरीकरण आ वैज्ञानिक प्रगतिक कारणे पारम्परिक कृषि-व्यवस्था, पशुपालन आ लोकजीवन पर असरि भेल अछि। कविता वर्तमान युगमे होइत तेज आर्थिक विकास आ हरियालीसँ दूर भ’ रहल ग्राम्य जीवनकेँ स्पष्ट करैत अछि। कतय गेलै पशु-पक्षी? कतय गेलै वनस्पति? पर्यावरण संकट पर लिखल ई कविता बच्चासभककेँ प्रकृति संरक्षणक संदेश दैत अछि।

नहि चुभकै छै नेना : कवितामे कवि समय केर परिवर्तन आ ओहिसँ होइत प्रभाव पर चिंतन करैत छथि। कवि स्पष्ट करैत छथि जे —

‘‘चलि गेलै दुनियाँ
बदलि गेलै दुनियाँ
नहि उमड़ै छै कमला
नहि बहै छै बलान
सुखा गेलै जीबछ
बिला गेलै बछराजा ’’[4]

अर्थात समयक संग समाज आ जीवनशैली सेहो बदैल रहल अछि। कोसी, कमला, बागमती जेकाँ नदी सभ अपन पुरान रूप गमा रहल अछि, जल दूषित भ’ गेल अछि, आ लोकक पारम्परिक जीवनशैली पर आधुनिकताक असर पड़ि रहल अछि।
कवि स्पष्ट करैत छथि जे —

‘‘नहि सुनै छै कोशी गीत
नहि देखै छै कमला नृत्य
चलि गेलै दुनियाँ
बदलि गेलै दुनियाँ
यू ट्यूबमे रमि गेलै ओ दिन दुनियाँ।’’[5]

एहि पंक्तिमे कवि स्पष्ट रूपसँ देखबैत छथि जे आब लोक अपन लोक-संस्कृति छोड़ि डिजिटल माध्यम पर निर्भर भ’ गेल अछि। लोकक गीत-नृत्य, पारम्परिक संगीत, आ मिथिलाक मूल सांस्कृतिक पहचान धीरे-धीरे इंटरनेटक दुनियाँमे विलीन भ’ रहल अछि। कविता मिथिला क्षेत्रक परम्परागत जीवनशैली आ संस्कृति पर होइत असरिकेँ स्पष्ट रूपेँ उजागर करैत अछि। मिथिला क्षेत्र अपन लोकगीत, नृत्य,आ पारम्परिक जल संसाधनक कारण प्रसिद्ध रहल अछि, मुदा एखन जखन बागमती आ कोसीक जल दूषित भ’ गेल अछि, लोक अपन जड़िसँ कटैत जा रहल अछि। कविता केवल सामाजिक परिवर्तन नहि, बल्कि पर्यावरणीय बदलाव पर सेहो प्रकाश दैत अछि। कविता अत्यंत सहज आ प्रवाहमय भाषामे लिखल गेल अछि। कवि पुनरावृत्तिक उपयोग क, पाठकक भावनात्मक जुड़ाव बढ़बै छथि। ई कविता मिथिला संस्कृति, पर्यावरण, आ आधुनिक जीवनशैलीक टकरावकेँ देखबैत अछि। कवि पाठककेँ एहसास कराबैत छथि जे अगर हम अपन पारम्परिक जीवनशैली आ प्राकृतिक संसाधनकेँ नहि बचाएब, तऽ एक दिन सभटा विलुप्त भ’ जायत। एहि कवितासँ हम एहि निष्कर्ष पर पहुँची सकैत छी जे आधुनिकताक संग-संग अपन परम्पराककेँ जीवित राखब आवश्यक

अछि। मिथिलाक नदी, गीत, नृत्य, आ भोजन-संस्कृतिकेँ बचाएब लेल सजग रहब जरुरी अछि। एहि कवितामे नदी-संस्कृतिक क्षरण पर प्रकाश पड़ैत अछि। मैथिली क्षेत्रक प्रमुख नदीसभ कमला, कोशी, बलान, बागमती केँ केंद्रमे राखि क' बच्चासभ पानि-संकट आ जल-संरक्षणक महत्व बुझैत छथि।

रूसल बाबा : ई कविता पर्यावरणीय चेतना जागृत करैत मार्मिक कविता अछि, जइमे बाल मनक जिज्ञासा, प्रकृति संग लगाव आ आधुनिकता द्वारा ओकर विनाश प्रति चिंता व्यक्त कएल गेल अछि। ई कविता बाल साहित्यक महत्वपूर्ण पक्ष, यानि बच्चाक सरल परंतु गंभीर प्रश्नवाचक शैलीमे पर्यावरणीय सरोकार प्रस्तुत करैत अछि। कवितामे बाल मन अपन पूर्वजक जंगल, जामुनबनी, महुबनी, खइर आ गम्हारि लकड़ी जेकाँ प्राकृतिक संसाधनक लोप भ' जाइत देख क' विचलित अछि। बच्चा अपन बाबासँ सवाल करैत अछि कि कियैक जंगल कटि रहल अछि? जामुनबनी, महुआबनी कियैक नष्ट भ' रहल अछि?

कवि स्पष्ट करैत छथि जे —

''कियै चलि गेलै जंगल
कियै उपड़ि गेलै जंगल
कतय गेलै परदादा बला जामुनबनी
कियै कटि गेलै महुबनी?
केहेन गमकै चह, केहेन रहै खइर
कियै ने सम्हारिक' रखलौं गम्हारि?
हमरा दिअय ने उतारा
ने तँ रूसि जैब हम बाबा! ''[6]

एहि पंक्ति द्वारा पर्यावरणीय संपदाक स्मरण कयल गेल अछि। बच्चा अपन बाल मनसँ पूछैत अछि जे कियैक पूर्वज सभ एहि प्राकृतिक धरोहरक रक्षा नहि कयलनि। अंतिम पंक्तिमे बच्चा अपन अधिकारक माँग करैत अछि। उतारा शब्द प्रकृतिक धरोहर अथवा संचित संपतिक प्रतीक अछि, जाहिमे बच्चा अपन बाबासँ अपन हिस्साक माँग करैत अछि। यदि ओकरा प्रकृतिक एहि अमूल्य धरोहरसँ वंचित कयल जायत, तँ ओ रूसि जायत। ई कविता केवल बाल मनक प्रश्नवाचक शैली तक सीमित नहि, बल्कि पर्यावरणीय सरोकारसँ सेहो जुड़ल अछि। बच्चा जतेक सहज भावे सवाल करैत अछि, ओतबे गंभीर रूपेँ समाजकेँ सोचय लेल बाध्य करैत अछि। जंगलक कटान, पारंपरिक वनस्पतिक नाश आ पीढी दर पीढ़ी प्राकृतिक संसाधनक उपेक्षा एहि कविता केर मूल चिंता थीक।

दै छै कुमारिकेँ मारि : ई मार्मिक कविता अछि, जे समाजक एक गूढ़ एवं संवेदनशील मुद्दा– कन्याभ्रूण हत्या एवं नारी असमानता पर केंद्रित अछि। कवि समाजक दोगलापन पर प्रहार करैत छथि, जतय एक दिस लोक दुर्गा पूजामे कुमारिकापूजन करैत अछि, आ दोसर दिस कन्याजन्मक विरोध करैत छथि। ई कविता समाजक विकृत मानसिकताक विरोधमे एक सशक्त आवाज थीक। कवि स्पष्ट करैत छथि जे —

''खाली दुर्गा पूजामे पूजै छै कुमारि
आन दिन कुमारिकेँ दै छै मारि! ''[7]

एहि पंक्तिमे विरोधाभास स्पष्ट अछि जे समाज दुर्गा रूपमे कुमारिक पूजन करैत अछि, ओ समाज ओकरे जन्मसँ पूर्व समाप्त क' दैत अछि। एहि कविता द्वारा कवि कन्याभ्रूण हत्या जेहन गंभीर विषय पर सामाजिक चेतना जागृत करबाक प्रयास करैत छथि। ई कविता केवल कन्याभ्रूण हत्या धरि सीमित नहि, बल्कि सम्पूर्ण नारी असमानताक मुद्दा उठबैत अछि। समाजक विडंबना अछि जे पूजन त' होइत अछि, मुदा वास्तविक जीवनमे नारिक सम्मान ओ अधिकार दैबामे कोनो रुचि नहि देखाइत अछि।

बौंसे छै दादी : एहि कवितामे गामक ओ परिवेश उकेरल गेल अछि, जाहिमे पहिले कौआक कुचराहट, कोइलिक कुहुक, पराती आ लोरीक गूंज सुनाइ दैत छल। मुदा, आइ ई सभ ध्वनि गुम भ' गेल अछि। कविताक आरंभमे कवि बड मार्मिक ढंगसँ बतबैत छथि जे—

‘‘गामोमे कतौ आब
ने कुचरै छै कौआ
ने कुहकै छै कोइली
ने सुनै छी पराती
ने सुनै छी लोरी
कनै छै बौआ
रूसै छै बुच्ची
हाथ दऽ मोबाइल
बौंसै छै दादी। ’’[8]

ई संकेत करैत अछि जे प्रकृतिक स्वाभाविक ध्वनि आ परम्परागत ग्रामीण संस्कृति धीरे-धीरे समाप्त भ’ रहल अछि। पहिने ग्रामीण जीवन जीवंत छल, जतय’ प्राकृतिक ध्वनि आ सांस्कृतिक परम्परा मिलि क’ एकटा मधुर वातावरण बनाबैत छल। मुदा आइ, एहि सभकेँ मशीनरी जीवन घोंटि रहल अछि। आधुनिकताक प्रभाव आ पारम्परिक जीवनशैलीमे आयल बदलावकेँ ई कविता मार्मिक ढ़गसँ प्रस्तुत करैत अछि। बच्चासभक मोबाइल लत आ बुजुर्गसभसँ दूर होइत अपन जड़िसँ कटैत सम्बन्धक चित्र एहि कवितामे उभरैत अछि। कविता आगाँ बदैत अछि आ बालपनक परिवर्तन पर ध्यान दैत अछि। जयत पहिने दादी अपन स्नेह आ लोरीसँ बच्चाकेँ बहलाबैत छलीह, ओतय आब मोबाइल ओ भूमिका निमाहैय लागल अछि। बच्चा कनैत अछि, मुदा हुनका चुप करबाक लेल कोनो लोरी ने, ने दादीक स्नेह, बल्कि एकटा मोबाइल हुनकर संगी बनि गेल अछि। एहि चित्रणसँ कवि आधुनिक समाजमे सम्बन्धक बदलबा पर गंभीर चोट करैत छथि। कविता आधुनिक समयक डिजिटल प्रभुत्व आ पारिवारिक सम्बन्ध कमजोर पड़बाक गंभीर समस्या पर प्रकाश दैत अछि। ई कविता मात्र दादीक भूमिका परिवर्तन नै, बल्कि संस्कृति आ परम्पराक हास केर बड़का प्रश्न ठाढ़ करैत अछि। पहिने जे परम्परागत ध्वनि आ अपनापन छल, आइ ओ सभ आधुनिकता आ प्रौद्योगिकीक दबाबमे गुम भ’ रहल अछि।

चिट्ठी- पतरी : ई कविता एकटा सामाजिक बदलावक सजीव चित्रण करैत अछि। पत्र लेखनक लुप्त होइत परम्परा आ डिजिटल माध्यमसँ आयल नव परिवर्तन पर ई कविता पुरान पीढ़ी आ नव पीढ़ी बीचक संवाद प्रस्तुत करैत अछि। कवि स्पष्ट करैत छथि जे —

‘‘की होइ छै चिट्ठी
की होइ छै पतरी?
के लिखै छै तार
कोना होइ छै बैरन ?
कतय गेलै मनिआर्डर ?
की होइ छलै लिफाफ?
कतय जाइत रहै अन्तरदेशी आ पोसकार्ड ? ’’[9]

प्राचीन काल सँ प्रयोग मे अबैत, चिट्ठी-पतरी, तार,लिफाफा, अन्तरदेशी आ पोस्टकार्ड जेहन साधन सभ धीरे-धीरे विलुप्त भ’ रहल अछि। कवि देखबैत छथि जे आब सिर्फ पुरान पीढ़ी, विशेषतः दादी माँ एहन लोक, एहन साधन सभकेँ स्मरण करैत छथि आ ओहि समयक बात बजैत छथि। कविता आगाँ बदैत अछि। कवि स्पष्ट करैत छथि जे —

‘‘मोबाइले दै छै चिट्ठी-पतरी
मोबाइले दै छै मनिआर्डर
मोबाइलेमे छै रेडियो, टेप रिकर्डर
मोबाइलेमे गेम
मोबाइलेमे डिक्शनरी आ कैलकुलेटर ।’’[10]

आब मोबाइल संचारक प्रत्येक रूपकेँ समेटने अछि चिट्ठी , मनिआर्डर, रेडियो, टेप रिकर्डर, गेम, डिक्शनरी आ कैलकुलेटर तक। ई कविता केवल संचार माध्यमक परिवर्तनक कथा नहि, बल्कि समाज, संस्कृति आ जीवन शैलीमे आयल परिवर्तनकेँ देखाबैत अछि। मोबाइल फोनक व्यापक उपयोगिता देखाइत अछि जेतेक सुविधाजनक अछि, ओतेकहि ई पुरान परम्परा सभकेँ विस्मृतिमे धकेलि रहल अछि। पुरान संचार माध्यम सभक महत्ता, पीढ़ीगत भिन्नता आ आधुनिकताकेँ प्रभाव ई कविता केर मुख्य विषय-वस्तु अछि।

वाटर बोतल : जल-संकट आ बिनु पानि जीवनक कठिनाइ पर लिखल ई कविता बच्चासभकेँ जल संरक्षण प्रति सचेत करैत अछि। ई कविता स्कूल जैइत बच्चा सभकेँ अनुभवकेँ माध्यम बतबैत, जल संसाधन पर बदलैत निर्भरता के उजागर करैत अछि। कवि स्पष्ट करैत छथि जे —

"की होइ छै इनार
की होइ छै चाँचर
कतय छै डबरा
देखाउ अहाँ हमरा ।"[11]

पहिने लोक सामूहिक रूपमे इनार, डबरा, आ चाँचरसँ अपन पियास बुझबैत छल, मुदा आब 'वाटर बोतल' अनिवार्य बनि गेल अछि। ई बदलाव पर्यावरणीय चिंता आ आधुनिक भोगवादी प्रवृत्ति पर गंभीर प्रश्न उठबैत अछि। ई कविता केवल एक साधारण अनुभवकेँ वर्णन नहि, बल्कि आधुनिक समाजकेँ जल स्रोत पर बदलैत निर्भरताकेँ उजागर करैत अछि।

वीरेन्द्र झा मैथिली बाल साहित्यक एकटा प्रतिष्ठित हस्ताक्षर छथि। हुनकर साहित्यमे मनोरंजनक संग जीवनोपयोगी शिक्षाप्रद संदेश सेहो रहैत अछि। ई संग्रह हुनकर काव्य-कला आ बाल-साहित्यकेँ प्रति समर्पणक प्रमाण थिक। शिक्षाप्रद आ मनोरंजनक संग समायोजन मैथिली साहित्यमे बाल कविताकेँ एकटा शिक्षाप्रद माध्यम बनाबयमे झा जीक योगदान सराहनीय अछि। हिनकर कविता सभमे भाषा, शैली आ भाव-सौंदर्यक उत्कृष्ट समन्वय देखल जाइत अछि। बाल मनोविज्ञानक गूढ़ समझ झा जीक कविता सभ बाल-पाठककेँ ध्यानमे राखिक' लिखल गेल अछि। ओ बच्चासभक रुचि, भाषा-शैली आ मानसिक स्तरकेँ ध्यानमे राखिक' कविता रचैत छथि।

निष्कर्ष :

'रूसल बाबा' केवल एकटा बाल कविता संग्रह नहि, बल्कि मैथिली बाल साहित्यक एकटा मूल्यवान उपलब्धि अछि। एहि संग्रहमे बच्चासभक जिज्ञासा, प्रश्न, खुशी, खेल तमाशा संग गंभीर सामाजिक, पर्यावरणीय आ सांस्कृतिक विषयसभ पर ध्यान देल गेल अछि। वीरेन्द्र झा अपन सहज भाषा, प्रभावी शिल्प आ रोचक शैलीसँ बाल-पाठककेँ मनोरंजन करबैत शिक्षाप्रद संदेश द' रहल छथि। बाल साहित्य केवल मनोरंजन नहि, बल्कि मानवीय संवेदनासभकेँ विकसित करबाक एकटा माध्यम होइत अछि।'रूसल बाबा' एहिमे पूर्ण रूपेँ सफल अछि। ई संग्रह मैथिली बाल साहित्यक मीलक पत्थर साबित होयत, कारण एहिमे साहित्यक सरसता, बाल-मनक सहजता आ समाजक गूढ़ समस्यासभकेँ प्रभावी ढ़गसँ उजागर कएल गेल अछि।

संदर्भ - स्रोत :

1. झा, वीरेन्द्र, 2024, रूसल बाबा, (बाल कविता-संग्रह), नवारम्भ, प्रकाशन, मधुबनी- भूमिका लेखिका- बिभा कुमारी, पृष्ठ - 8
2. झा, वीरेन्द्र, 2024, रूसल बाबा, (बाल कविता-संग्रह), नवारम्भ, प्रकाशन, मधुबनी, पृष्ठ-13
3. झा, वीरेन्द्र, 2024, रूसल बाबा, (बाल कविता-संग्रह), नवारम्भ, प्रकाशन, मधुबनी, पृष्ठ -14
4. झा, वीरेन्द्र, 2024, रूसल बाबा, (बाल कविता-संग्रह), नवारम्भ, प्रकाशन, मधुबनी, पृष्ठ- 15
5. वएह, पृष्ठ -15
6. झा, वीरेन्द्र, 2024, रूसल बाबा, (बाल कविता-संग्रह), नवारम्भ, प्रकाशन, मधुबनी, पृष्ठ-19
7. झा, वीरेन्द्र, 2024, रूसल बाबा, (बाल कविता-संग्रह), नवारम्भ, प्रकाशन, मधुबनी, पृष्ठ- 32
8. झा, वीरेन्द्र, 2024, रूसल बाबा, (बाल कविता-संग्रह), नवारम्भ, प्रकाशन, मधुबनी, पृष्ठ- 35
9. झा, वीरेन्द्र, 2024, रूसल बाबा, (बाल कविता-संग्रह), नवारम्भ, प्रकाशन, मधुबनी, पृष्ठ- 36
10. वएह,पृष्ठ - 36
11. झा, वीरेन्द्र, 2024, रूसल बाबा, (बाल कविता-संग्रह), नवारम्भ, प्रकाशन, मधुबनी, पृष्ठ- 37